

३२

[illegible][illegible]

स्यात्। अथ हं कुटिका एव न कुटानं च विन न कुट। कावयत्रादिह न कुटय गमी कुन सं जायत। द्वादशा वा द्विनाल नल श्विका व
 कावयत्रादिह न कुटय गमी न कुटि न। यद्यमुद्रा रिपाया काया निमुद्रा मरुः गृत्वा। या निथामो समा कुट्या मुद्रा न
 वधुः। अमुना रथा यथा या निंकावय अमुकाय वि॥ अत्र कुट्या गवमा ग्री कुया नयत्रादिह कुगा। रथ गमि
 सु सवय कुटिम पातः। विद्वप सुद नः कुहाय नयानो कुहावमात। अत्र नय गगा। मिहं सय न कुन सं जायः
 शि ग्या लक्ष्मि वृत्ति कथा मानं निषा पतः। कन सं यत्र न कुन्या यी कय वय यत्र नः। वद्वमात्रा। द्वि न्या मा स्या सन मरुः न्य
 गाल कं गुना मा ग्री सुं पधु य ग न प्रिय। कय पा विद्वका कु हं मुद्रुली क न्य या दया गा। गुह निव प मरु सु दिशि यं य।

समासकः कृष्णस्य काव्यदादि संघट्टादि
मूलमर्थकाश्च कर्तृनीत्याद्यनामसंघिषा
कुविपीयनः कर्तृकाश्च मणिरवोत्तुसं
कृष्णस्य सच्युतकाश्च कनिष्ठा मणयादयः ॥
उसर्वेषां कृष्णकावका ॥ यनामुदासमाग्याना
अनामाकलिकया हवाडगावृधौकयः ॥ धी

शुभयश्च संघिषा मरुयश्च ॥ कर्तृनानामिकोत्तुसंघिषा मण्यसंघिनोनाकाया
मंडिदिग्मयथा ॥ संयावानवगानादश्च कृष्णवर्तनिष्ठको ॥ कादृगवदिकर्तृश्रुतिगिषा
सायकश्च कृष्णो मण्यसंघिनो ॥ यश्च मडासमाग्यानायानिमडा मरुः ॥ ५ ॥
अश्च मण्यसंघिनो ॥ निशिका ॥ मरुस्यश्च कृष्णोत्तुनीयगीयानिमडा मरुतक
॥ सोम्युक्तं यद्वरीणां नृपयामुडा रथगापिथ ॥ कषयाभिसमाभनरुदपीथा रथगामिनि ॥
गमायुलाका मिला ॥ हादिना नृगमलकुशगानिना रुसंमयः ॥ वधुसप्रिः ॥ कृष्णकर्तृना

निलमादिहंतिवमिद्यदिष्याति ॥
नरुद्वंशमयः ॥ यथारुद्वंशमिदुनयमः
यथाहं नृपिणासायः ॥ दशमाससदीवति
पृष्ठा वायिस्थं यथायदंरुवति ॥ यामि
याननयद्याननदीवति ॥ आरुद्वंशमयकय
कृष्णस्य मण्यपिदुदः ॥ दशमगद्वंशमन

वर्षेयनमरुद्वंशमयकयः ॥ नरुद्वंशमयकयः ॥ नरुद्वंशमयकयः ॥ नरुद्वंशमयकयः ॥
यथाहं नृपिणासायः ॥ दशमाससदीवति ॥ यामि
याननयद्याननदीवति ॥ आरुद्वंशमयकय
कृष्णस्य मण्यपिदुदः ॥ दशमगद्वंशमन

...
 मसुदकविमदुव ॥ मालिनीधाममसुवविह
 ...
 निमृकैरिह धूवुविकैः ॥ नासिहकावसाय
 ...
 कामठादाकाममयवदि ॥ यराकामययसु
 मया ॥ ...

...
 वामकाधवव ॥ ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

आसदादिः कयालकममदावलः ॥ तथालावय
 काकादवमकुनकीनहाथवावमुन ॥ दपीदिः ॥
 आरंथादिरेव्यासमदावशाकिवमया ॥ कुडम
 दासिः ॥ वलासाकिवलाविवना ॥
 विकारमुकुर्व ॥ मदादुषासुविथारः ॥ कुडया
 मिडाशुनडावकमईकारिकासुधा ॥ रथादकाः

लावप्राडा मरीडाममासका ॥ डिपुनीमपुनीमप्रासाविनीडाकिनीवि ॥ कडोरीकालिनीदवीदादवीडि
 यालमुकुदुदुपुपुपुपुपुपु ॥ यमइधामदुधुमनुमालाकालिका ॥ विकरालाकयालनुमेलकुथासु
 स्थीनदीसेवकनीसेवकषावला ॥ देकरनमदवीनीः ॥ मारीदीयमाशुन ॥ कुडयाल
 हयावविरुयादवीहमुनीसुमुपीरुधा ॥ मचेनीभादे ॥ नीमायानिगडाकीलनीरुधा ॥ चववका
 मारुयानकः ॥ काकदवमकुनः ॥ कमरुयनिवासिनी ॥ ददुरावादुगुयावमकुमालाहलामका ॥ नल
 सयनामावमदागीरथयादिकाः ॥ कडुनीपीधनीविमदायामीहकादिक ॥ ककावदवमकावावसु

आशाधवायकाय ॥ सासनसादुय
 मनाधवाययदुविसिदाहमायवपुकादि
 श्रीमनुत्रिकामनमडाडावधकद्विद्यापिकाया
 मुरं कधंदवा ॥ निग्यासंमुसुहृदगनिसधपक ॥
 आद्यायनंमरीरसायाकामादिधसाधन ॥ अर्जुन
 मरुणमाउलावापिकासुधमकुनाडापमका

दुष्टायादुष्टाशुववाधवि ॥ कस्यवामायकाशालीया ॥ कथयमार्धकलकमककनमयावामाउलामावय
 शहरीयथाहवाकुकममनकपा ॥ सर्वसुकुदवगंकरिवादिमिग्याहसं ॥ ॥ ललितुलालिकामाय ॥
 नामः ॥ निगदयदलः ॥ ॥ श्रीकुडिकुडवाव ॥ ॥ शुभंदवम ॥ ॥ याधुवंशपाधपसवि
 पुयागंविधुलदव ॥ ॥ सर्वधापिविहकि ॥ ॥ कशप्रनाप्रादुमिहामिसावाशानरुवंकिना ॥
 चिदसंकुयाहृमईकरुधा ॥ विधुमईकराचिविलयकुधसापन ॥ कनदुष्टविधादीनांसर्वइष्टविमदने ॥ यथा
 मार्धसंसिद्धसर्वमाकुधसापन ॥ वगीकरणाकमापिआकधेपतिपिकिया ॥ दिशादिवावमकावमगाकम ॥

ल
 २
 २२

२२

लघुपुत्रकयपक। घट्टकायस्य दार्ढ्यं शलासं ध्रुवलां क्रिं॥ कायकालसम्यक् विविक्तसु पादभेद। लत्रिपन
 संयुक्तसोपायनामनुमपाकः। लिप्तिहाकाययथाशुभाकृत्वाकृतिद्वारणः॥ इरमुत्थादयत्तुवाहमद्वमाप
 लिप्यरु। विद्यतीरुमृगं हृत्वा दुर्द्वी वंयधालिकव
 दामंयकुतीरुद्वयद्वयसमाहितः। विद्यनागद्वकः
 मयद्वपः। यथाशुभां न्यकुतीरुद्वयद्वयसमाहितः॥ कलद्वयद्वयसमाहितः। निमृशकाद्वि विविक्तयु। यकाद्वयललाद्वय
 वकुली क्रिं॥ यवैरुवकलायदिसाकाशवीयकिः॥ यवैरुवकलायदिसाकाशवीयकिः॥ यवैरुवकलायदिसाकाशवीयकिः॥

लघुपुत्रकयपक। घट्टकायस्य दार्ढ्यं शलासं ध्रुवलां क्रिं॥ कायकालसम्यक् विविक्तसु पादभेद। लत्रिपन
 संयुक्तसोपायनामनुमपाकः। लिप्तिहाकाययथाशुभाकृत्वाकृतिद्वारणः॥ इरमुत्थादयत्तुवाहमद्वमाप
 लिप्यरु। विद्यतीरुमृगं हृत्वा दुर्द्वी वंयधालिकव
 दामंयकुतीरुद्वयद्वयसमाहितः। विद्यनागद्वकः
 मयद्वपः। यथाशुभां न्यकुतीरुद्वयद्वयसमाहितः॥ कलद्वयद्वयसमाहितः। निमृशकाद्वि विविक्तयु। यकाद्वयललाद्वय
 वकुली क्रिं॥ यवैरुवकलायदिसाकाशवीयकिः॥ यवैरुवकलायदिसाकाशवीयकिः॥ यवैरुवकलायदिसाकाशवीयकिः॥

लघुपुत्रकयपक। घट्टकायस्य दार्ढ्यं शलासं ध्रुवलां क्रिं॥ कायकालसम्यक् विविक्तसु पादभेद। लत्रिपन
 संयुक्तसोपायनामनुमपाकः। लिप्तिहाकाययथाशुभाकृत्वाकृतिद्वारणः॥ इरमुत्थादयत्तुवाहमद्वमाप
 लिप्यरु। विद्यतीरुमृगं हृत्वा दुर्द्वी वंयधालिकव
 दामंयकुतीरुद्वयद्वयसमाहितः। विद्यनागद्वकः
 मयद्वपः। यथाशुभां न्यकुतीरुद्वयद्वयसमाहितः॥ कलद्वयद्वयसमाहितः। निमृशकाद्वि विविक्तयु। यकाद्वयललाद्वय
 वकुली क्रिं॥ यवैरुवकलायदिसाकाशवीयकिः॥ यवैरुवकलायदिसाकाशवीयकिः॥ यवैरुवकलायदिसाकाशवीयकिः॥

महर्षिः ॥ १ ॥
महर्षिः ॥ २ ॥
महर्षिः ॥ ३ ॥
महर्षिः ॥ ४ ॥
महर्षिः ॥ ५ ॥
महर्षिः ॥ ६ ॥

महर्षिः ॥ ७ ॥
महर्षिः ॥ ८ ॥
महर्षिः ॥ ९ ॥
महर्षिः ॥ १० ॥
महर्षिः ॥ ११ ॥
महर्षिः ॥ १२ ॥

महर्षिः ॥ १३ ॥
महर्षिः ॥ १४ ॥
महर्षिः ॥ १५ ॥
महर्षिः ॥ १६ ॥
महर्षिः ॥ १७ ॥
महर्षिः ॥ १८ ॥

महर्षिः ॥ १९ ॥
महर्षिः ॥ २० ॥
महर्षिः ॥ २१ ॥
महर्षिः ॥ २२ ॥
महर्षिः ॥ २३ ॥
महर्षिः ॥ २४ ॥

महर्षिः ॥ २५ ॥
महर्षिः ॥ २६ ॥
महर्षिः ॥ २७ ॥
महर्षिः ॥ २८ ॥
महर्षिः ॥ २९ ॥
महर्षिः ॥ ३० ॥

कथयन्त्यथा ॥ १ ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ २ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ३ ॥
 त्रिषु काय कथयन्त्यथा ॥ ४ ॥
 उक्तमिति ॥ ५ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ६ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ७ ॥

संप्रति निरुद्ध ॥ वनादयदि संप्रति निरुद्ध ॥ १ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ २ ॥
 त्रिषु काय कथयन्त्यथा ॥ ३ ॥
 उक्तमिति ॥ ४ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ५ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ६ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ७ ॥

सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ १ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ २ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ३ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ४ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ५ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ६ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ७ ॥

उक्तमिति ॥ १ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ २ ॥
 त्रिषु काय कथयन्त्यथा ॥ ३ ॥
 उक्तमिति ॥ ४ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ५ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ६ ॥
 सा ॥ द्याया काय कथयन्त्यथा ॥ ७ ॥

महाभक्तिके कलसंस्था कवा किमः॥ मया
 ॥ भवयागविदाना मुनिदमाभि शेषा ॥ ३॥ का
 कुलयागिणाः॥ ॥ ममगीव कृकान दानि शत्रवयः
 दानयद सुधाममक्षेत्रे ॥ धृष्टि वासा रक्षुका
 धर्म रक्षक मम मधाम विलसापनः॥ उरुमाद
 सुदं रक्षकः॥ यदमायिदि रक्षामि रक्षायी

शत्रुलक्षणादिप्रकारं देनि मि ॥ वतुगणीयदद्वं कलः कलनिमर्षपा ॥ यदमायि विद्यनां तुम कलादक्षमा मव
 दिहादशकायकः कदिल कुरुतु पूयः॥ महाभावा कुरुतु मम मरुपयं दु कुलकनु ॥ लकुलमम कनुयाव कमाचारः
 दं वृत्तं ॥ कुलापु र यददु सुकुरु सुं यर मरुमं ॥ धृष्टि
 दृगा कुरु लं लरु ॥ द्वि कि सुलपमा मिद्विः द्वि कि माणम
 ममिदी किः ॥ २५२ वथ वथ गार्दगः ॥ २५३ वथ वथ मम मम दः यदमायि क्रियापु रः ॥ कथि कसर कसं नु यदमायि
 पुमं कसः ॥ २५४ मम नयदमायि कः ॥ २५५ मम नुमायि कः ॥ २५६ नि कुला लिका माय शीमकः



2915
 ASHA ARCHIVES